Shaikshik Parisamvad (An International Journal of Education)
SPIJE , ISSN 2231 – 2323 (Print), 2231 – 2404 (Online)
Vol.3, No.2, July 2013, pp 73-80.

एकेडमिक स्टाफ कॉलेजों के उन्मुखता कार्यक्रम (सम्बन्धित अध्ययनों पर आधारित एक विश्लेषण)

(**पूनम जायसवाल,** भूतपूर्व शोध छात्रा, शिक्षा संकाय, का0हि0वि0वि0, वाराणसी, यू.पी., भारत)

Abstract

Academic staff colleges are considered as a tool for quality enhancement of teachers. It improves professional competency of teachers through its orientation programs and refresher courses. the objective of orientation programs is to provide professional competency as well as opportunity for personality development to the newly inducted teachers in higher education. But orientation programs are a from deceiving their objectives. In this paper, those problems are analyzed which affect the achievement of objectives of orientation programs. The analysis is based on the various studies related to orientation programs. It covers the problems relating several aspects of orientation programs as curriculum, organization of orientation programs, organizers and physical and human resourses. Some suggestions, related to these problems, are also presented in this paper.

Key words : Academic staff college, Orientation programs.

स्वतंत्र भारत के आर्थिक विकास सामाजिक प्रगति तथा शक्तिशाली लोकतंत्र की प्राप्ति में उच्च शिक्षा ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। (राष्ट्रीय ज्ञान आयोग, 2006) उच्च शिक्षा देश के भविष्य को स्वरूप प्रदान करने के लिए उपयुक्त वैचारिकी तथा कुशल मानव संसाधन प्रदान करती है साथ ही शिक्षा व्यवस्था में शीर्ष पर होने के कारण शिक्षा के अन्य स्तरों को भी सहयोग प्रदान करती है। संस्कृति की रक्षा व उसके हस्तांतरण का उत्तरदायित्व भी उच्च शिक्षा व्यवस्था पर होता है। युवा पीढ़ी में उचित मूल्यों का प्रतिस्थापन कर उन्हें दिशा निर्देशन देने का कार्य भी उच्च शिक्षा के माध्यम से होता है। उच्च शिक्षा के इन सभी उत्तरदायित्वों के निर्वहन में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका शिक्षकों की होती है। उन्हें कुशलतापूर्वक शिक्षण कार्य करने के साथ ही अनुशासक, मार्गदर्शक, मूल्यांकनकर्त्ता, शोधकर्त्ता, प्रशासक, नवाचारी एवं पाठ्येत्तर क्रियाकलापों के आयोजक की भूमिका निभानी पड़ती है (अग्रवाल, 1998)। इस परिप्रेक्ष्य में उन्हें निरन्तर व्यावसायिक उन्मुखता की आवश्यकता होती है। शिक्षकों की इस आवश्यकता की पूर्व हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा देशभर में एकेडमिक शिक्षकों को व्यावसायिक कुशलता प्रदान करने के लिए इन कॉलेजों में उन्मुखता कार्यक्रम चलाए जाते हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में इन एकेडमिक स्टाफ कॉलेजों तथा इनमें संचालित उन्मुखता कार्यक्रम का संक्षिप्त परिचय देते हुए उन्मुखता कार्यक्रम की उन समस्याओं का विश्लेषण किया गया है, जिनके कारण उन्मुखता कार्यक्रम अपने निर्धारित उद्देश्यों से पीछे रह जाते हैं, तथा जिसका सीधा प्रभाव शिक्षकों की गुणवत्ता एवं उच्च शिक्षा व्यवस्था पर पड़ता है। शोध हेतु द्वितीयक प्रकार के आँकड़ों की सहायता की गयी है तथा उन्मुखता कार्यक्रम के विविध पक्षों से सम्बन्धित अध्ययनों का उपयोग किया गया है।

एकेडमिक स्टाफ कॉलेजों का सूत्रपात

उच्च शिक्षा में शिक्षकों के व्यावसायिक प्रशिक्षण की आवश्यकता को सर्वप्रथम शिक्षा आयोग (1964–66) ने पहचाना तथा उच्च शिक्षा के गुणवत्ता सुधार के उपायों में शिक्षकों की व्यावसायिक उन्मुखता को सर्वोपरि रखा। इसके दो दशक बाद राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) ने भी उच्च शिक्षा शिक्षकों की व्यावसायिक उन्मुखता को अनिवार्य समझते हुए निम्नांकित सुझाव दिए–

1. प्रवक्ता पद पर नवनियुक्त शिक्षकों के लिए शिक्षण प्रणाली विज्ञान, शिक्षा शास्त्र, शिक्षामनोविज्ञान आदि में

© 2013 AAEBHU

विशेष रूप से विकसित उन्मुखता कार्यक्रमों का आयोजन करना।

2. सेवारत शिक्षकों के लिए कम से कम पाँच वर्षो में एक बार पुनश्चर्या पाठ्यक्रमों का आयोजन करना।

शिक्षा आयोग (1964–66)तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति (1986) के सुझावों पर अमल करते हुए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू0जी0सी0) ने 1987 ई0 में एकेडमिक स्टाफ ओरिएन्टेशन स्कीम (ए0एस0ओ0एस0) तैयार किया। इस स्कीम के अन्तर्गत देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में 48 एकेडमिक स्टाफ कॉलेजो की स्थापना की गयी। अतः शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रमों के सन्दर्भ में वर्ष 1987 भारतीय उच्च शिक्षा व्यवस्था के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण वर्षो में एक था। राष्ट्रीय स्तर पर उच्च शिक्षा शिक्षकों की व्यावसायिक कुशलता विकसित करने का यह पहला और व्यापक प्रयास था। सातवीं योजना में शुरू हुयी यह योजना दर योजना आगे बढ़ती रही और भारत में अब तक 57 एकेडमिक स्टाफ कॉलेजों की स्थापना हो चुकी है। इन एकेडमिक स्टाफ कॉलेजों में तीन प्रकार के कार्यक्रम चलाए जाते हैं–

(1) विश्वविद्यालय / महाविद्यालय स्तर पर नवनियुक्त शिक्षकों हेतु उन्मुखता कार्यक्रम (ओरिएन्टेशन प्रोग्राम)

(2) सेवारत शिक्षको हेतु विभिन्न विषयों में पुनश्चर्या पाठ्यक्रम (रिफ्रेशर कोर्स)

(3) वरिष्ठ शिक्षकों, प्रशासकों, विभागाध्यक्षों तथा प्रधानाचार्यों के लिए अंशकालिक उन्मुखता कार्यक्रम।

विगत दो दशकों से एकेडमिक स्टाफ कॉलेज भारत की उच्च शिक्षा व्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। शिक्षक अभिप्रेरणा तथा व्यावसायिक उन्मुखता द्वारा उच्च शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने का यह एक सराहनीय प्रयास है। इन एकेडमिक स्टाफ कॉलेजों को उच्च शिक्षा शिक्षकों की व्यावसायिक कुशलता में सुधार के एक उपकरण के रूप में समझा गया है। यही कारण है कि एकेडमिक स्टाफ कॉलेजों के कार्यक्रमों में निरन्तर मात्रात्मक वृद्धि दर्ज की जा रही है।

उन्मुखता कार्यक्रम

विषय विशेष में निष्णात (मास्टर) नव नियुक्त शिक्षकों को शिक्षण व्यवसाय में उन्मुख बनाने तथा उनमें शिक्षण व्यवसाय के लिए आवश्यक कुशलताओं का विकास करने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा उन्मुखता कार्यक्रमों का आयोजन एकेडमिक स्टाफ कॉलेजों के माध्यम से किया जाता है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा उन्मुखता कार्यक्रम के निम्नांकित उद्देश्य निर्धारित किए गये हैं–

(1) भारतीय एवं वैश्विक परिप्रेक्ष्य में सामान्यतः शिक्षा के महत्व तथा विशेषतः उच्च शिक्षा के महत्व को समझना।

(2) भारतीय नीतियों के विशेष सन्दर्भ में जहाँ सहिष्णुता व समानता, समाज के आधारभूत सिद्धान्त हैं, आर्थिक व सामाजिक–सांस्कृतिक विकास तथा शिक्षा के अन्तर्सम्बन्धों को समझना।

(3) समान एवं धर्म निरपेक्ष समाज के राष्ट्रीय लक्ष्य की प्राप्ति के सन्दर्भ में महाविद्यालय / विश्वविद्यालय शिक्षकों की भूमिका को समझना।

(4) विश्वविद्यालय / महाविद्यालय स्तर पर शिक्षण कौशलों को प्राप्त करना और उन्हें विकसित करना।

(5) विषय विशेष एवं ज्ञान सम्पदा के विकास के प्रति जागरूक करना।

(6) विश्वविद्यालय / महाविद्यालय के प्रवन्धन व संगठन को समझना तथा इस सम्पूर्ण व्यवस्था में शिक्षक की भूमिका को समझना।

(7) व्यक्तित्व विकास, पहल करने की क्षमता तथा रचनात्मकता के विकास के अवसरों का उपयोग करना।

उन्मुखता कार्यक्रम की समस्याएँ

एकेडमिक स्टाफ कॉलेजों द्वारा संचालित उन्मुखता कार्यक्रम विश्व विद्यालय अनुदान आयोग (यू0जी0सी0) की एक महात्वाकांक्षी एवं उपयोगी योजना है, जिसका लक्ष्य उच्च शिक्षा शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार के द्वारा

उच्च शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना है। इसलिए इन्हें शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार के उपकरण के रूप में समझा जाता है। शिक्षकों को शिक्षा व समाज के अन्तर्सम्बन्धों को समझने में सहायता करने, उनके शिक्षण कौशल में सुधार करने, उनके तकनीकी एवं सम्प्रेषण कौशल में सुधार करने और उनके व्यक्तित्व का विकास करने के वृहद् उद्देश्यों के साथ उन्मुखता कार्यक्रम की योजना शुरू की गयी। परन्तु यह कार्यक्रम अपने वास्तविक लक्ष्यों की प्राप्ति से बहुत पीछे है। कुमार व कुमार (1998) ने विश्वविद्यालय शिक्षकों के शिक्षण कौशल पर आधारित अध्ययन में पाया कि अधिकांश विश्वविद्यालय शिक्षकों में विभिन्न शिक्षण कौशलों का अभाव था।

उन्मुखता कार्यक्रम के उद्देश्यों के अन्तर्गत शिक्षकों के वैयक्तिक, सामाजिक एवं राष्ट्रीय मूल्यों में सुधार की अपेक्षा की जाती है। किन्तु जोशी व पारीख (2006) ने उन्मुखता कार्यक्रम के प्रतिभागियों पर किए गये अध्ययन में पाया कि उन्मुखता कार्यक्रम में भाग लेने के बावजूद इन शिक्षकों के राष्ट्रीय व सामाजिक मूल्यों में बहुत कम सुधार हुआ।

इसी प्रकार उन्मुखता कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों में जागरूकता एवं स्वअधिगम हेतु प्रेरणा उत्पन्न करना है, जो कि शिक्षकों की व्यावसायिक कुशलता में वृद्धि का मूल कारक है। जबकि उन्मुखता कार्यक्रम में भाग ले चुके शिक्षकों पर किए गये अपने अध्ययन में बाबू (2007) ने पाया कि 75 प्रतिशत शिक्षको ने बीते वर्ष में एक भी पुस्तक नहीं पढ़ी। 98 प्रतिशत शिक्षक ठीक ढंग से अपनी विशेषज्ञता क्षेत्र की पहचान नहीं कर पाये। 95 प्रतिशत शिक्षकों को कम्प्यूटर का ज्ञान नहीं था और न ही इन्होंने कभी इण्टरनेट का उपयोग किया। प्रतिभागी को कम्प्यूटर चलाने की बेसिक जानकारी, ई–मेल आई0डी0 बनाना, इसका तथा इण्टरनेट का उपयोग करना सिखाया जाता है। फिर भी बहुत कम शिक्षक अपने इ–मेल आई0डी0 का निरन्तर उपयोग करते हैं।

राजशेरवर एवं चन्दर (2002) ने प्रधानाचार्यों से प्राप्त प्रत्युत्तर पर आधारित अध्ययन में पाया कि उन्मुखता कार्यक्रम में भाग लेने के बावजूद इनके अधीन कार्यरत शिक्षकों को सम्प्रेषण कौशल, शिक्षण कौशल, अभिप्रेरणा स्तर तथा व्यक्तित्व विकास में सुधार बहुत कम हुआ।

उन्मुखता कार्यक्रम के सम्बन्ध में हुए अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि उन्मुखता कार्यक्रम के उद्देश्यों की प्राप्ति अपेक्षित स्तर तक नहीं हो पा रही है। उन्मुखता कार्यक्रमों की असफलता का मुख्य कारण इसके विविध पक्षों से सम्बन्धित समस्याएँ हैं। उन्मुखता कार्यक्रम के उद्देश्यों को प्रभावित करने वाली समस्याओ का उल्लेख इस प्रकार है–

पाठ्यक्रम

यू0जी0सी0 ने उन्मुखता कार्यक्रम हेतु वृहद् पाठ्यक्रम प्रस्तुत किया है। कार्यक्रम के उद्देश्यों को ध्यान में रखकर इसमें निम्नांकित चार घटक रखे गये हैं–

सारणी–1 : उन्मुखता कार्यक्रम पाठ्यक्रम के घटक

क्र0सं0	घटक	घटक के विषय
1.	‘अ’	समाज पर्यावरण विकास व शिक्षा के मध्य अन्तर्सम्बन्धों के प्रति जागरूकता
2.	‘ब’	शिक्षा दर्शन, भारतीय शिक्षा व्यवस्था तथा शिक्षाशास्त्र
3.	‘स’	संसाधनों के प्रति जागरूकता तथा ज्ञान का सृजन
4.	‘द’	व्यक्तित्व विकास एवं प्रबन्धन

प्रत्येक घटक के अन्तर्गत सम्बन्धित प्रकरणों की सूची भी प्रस्तुत की गयी है। वर्तमान सन्दर्भ में इस पाठ्यक्रम में अनेक कमियाँ दिखायी देती हैं। पाल (1993) तथा रामानुजम् (1993) ने पाठ्यक्रम मूल्यांकन सम्बन्धी अध्ययन में पाया कि उन्मुखता कार्यक्रम पाठ्यक्रम को प्रतिभागियों तथा प्रशासकों ने समान रूप से बोझिल माना। उन्मुखता कार्यक्रम में सभी विषयों के शिक्षकों के लिए समान पाठ्यक्रम होता है। इसमें कला, विज्ञान व वाणिज्य के लगभग सभी विषयों की सामान्य जानकारी शामिल होती है। इससे ये पाठ्यक्रम अत्यन्त बोझिल हो जाते हैं (अड़वन्त, 1998)। उन्मुखता कार्यक्रम हेतु निर्धारित समयावधि के सापेक्ष उन्मुखता कार्यक्रम का पाठ्यक्रम वास्तव में वृहद् (जायसवाल 2010) 28 दिन की समयावधि के शिक्षकों को अनेक कुशलताओं से युक्त करने के साथ ही उनमें जागरूकता लाने तथा शिक्षण व्यवसाय के प्रति उनके दृष्टिकोण में विस्तार लाने का प्रयास किया जाता है। 28 दिन की इस थोड़ी समयावधि में अनेक उद्देश्यों को एक साथ प्राप्त कर लेने की प्रत्याशा के कारण ये पाठ्यक्रम अधिक बोझिल हो जाते हैं। उन्मुखता कार्यक्रम में अधिकांशत व्याख्यान विधि का ही उपयोग किया जाता है। साथ ही ऐसे विषय जिन्हें प्रदर्शन विधि या क्रिया विधि द्वारा बताया जाना चाहिए, उन्हें भी व्याख्यान विधि द्वारा ही समेटने का प्रयास किया जाता है (रामानुजम्, 1998) इस स्थिति में अधिकाधिक ऊबाऊ व्याख्यान सुनने के कारण ये पाठ्यक्रम प्रतिमागियों को बोझिल लगने लगते हैं।

विभिन्न अध्ययनों से ज्ञात होता है कि उन्मुखता कार्यक्रम के पाठ्यक्रम में कुछ परिवर्तन की आवश्यकता है। पासी व पाल (1991) के अध्ययन के अनुसार प्रतिभागी शिक्षकों ने घटक 'अ' के प्रकरण यूथ, अनुशासनहीनता, बहुभाषायीकरण, बहुसंस्कृति, मूल्य आधारित शिक्षा तथा घटक 'ब' के प्रकरण मूल्यांकन पद्धति, पुस्तकालय अध्ययन, घटक 'द' के प्रकरण– 'क्लब कैसे चलाएँ' को प्रासंगिक नहीं माना। इसी प्रकार पासी व पाल (1994) ने भी अपने अध्ययन में पाया कि प्रतिभागी शिक्षकों ने उच्च–शिक्षा धर्म निरपेक्षता प्रकरण को अपने व्यावसायिक उन्मुखता के दृष्टिकोण से स्वीकार नहीं किया। जायसवाल (2010) के उन्मुखता कार्यक्रम पाठ्यक्रम सम्बन्धी अध्ययन के अनुसार प्रतिभागी शिक्षकों ने घटक 'अ' एवं घटक 'द' को रूचिकर नहीं माना। इन अध्ययनों से प्राप्त परिणाम इस बात की आवश्यकता प्रकट करते हैं कि उन्मुखता कार्यक्रम के पाठ्यक्रम में अनेक कमियाँ हैं, जो इसके उद्देश्यों की प्राप्ति को प्रभावित करते हैं, अतः पाठ्यक्रम को परिवर्तित परिस्थितियों के अनुसार पुनर्मूल्यांकित करने की आवश्यकता है।

पाठ्यक्रम का मूल्यांकन

उन्मुखता कार्यक्रम के लक्ष्य प्राप्ति को प्रभावित करने वाली एक मुख्य समस्या इसके पाठ्यक्रम का व्यापक स्तर पर मूल्यांकन की है। इस समस्या का मुख्य कारण विभिन्न एकेडमिक स्टाफ कॉलेजों द्वारा उन्मुखता कार्यक्रम हेतु अलग–अलग पाठ्यक्रम का निर्धारण करना है। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग ने उन्मुखता कार्यक्रम पाठ्यक्रम के अन्तर्गत विविध प्रकरणों की सूची नमूने के तौर पर प्रस्तुत किया है, इसलिए प्रत्येक एकेडमिक स्टाफ कॉलेज अपने द्वारा चयनित प्रकरण पाठ्यक्रम में रखते हैं (सिंह, 1997)। जायसवाल (2010) ने अपने अध्ययन में पाया कि एकेडमिक स्टाफ कॉलेजों द्वारा उन्मुखता कार्यक्रम के लिए निर्धारित पाठ्यक्रम में भिन्नता थी। इस लचीलेपन के कारण उन्मुखता कार्यक्रम पाठ्यक्रम का मूल्यांकन व्यापक स्तर पर करने में कठिनाई आती है। इसके साथ ही विभिन्न विषय वर्ग के शिक्षक इस पाठ्यक्रम के अलग–अलग घटकों को अपने लिए उपयोगी समझते हैं। घर व सिंह (1991) तथा जायसवाल (2010) ने अपने अध्ययनों में पाया कि कला वर्ग, समाज विज्ञान वर्ग तथा विज्ञान वर्ग के प्रतिभागी शिक्षकों ने अपने व्यवसाय हेतु प्रासंगिकता के सन्दर्भ में अलग–अलग घटकों को प्राथमिकता दिया। अर्थात् विभिन्न विषय वर्ग के शिक्षकों की व्यावसायिक आवश्यकताएँ भी भिन्न–भिन्न हैं। इस स्थिति में पाठ्यक्रम में संशोधन करना एक कठिन समस्या है।

उन्मुखता कार्यक्रम का आयोजन

उन्मुखता कार्यक्रम के उद्देश्यों की प्राप्ति को प्रभावित करने वाली एक मुख्य समस्या उन्मुखता कार्यक्रम के आयोजन से सम्बन्धित है। उन्मुखता कार्यक्रम के आयोजन में आयोजकों को जिस मुख्य समस्या का सामना करना पड़ता है, वो है प्रतिभागियों की विषम प्रकृति जो कि विविध अनुशासनों, अनुभवों व विविध क्षेत्रों से आते हैं (चलम, 1991; कुमार, 1998)। दास (2003) के अध्ययन के अनुसार विभिन्न एकेडमिक स्टाफ कॉलेज

के स्टाफ ने यह स्वीकार किया कि उन्मुखता कार्यक्रम के प्रतिभागी शिक्षक योग्यता अनुभव व ज्ञान के सम्बन्ध में भिन्न–भिन्न होते हैं, इसलिए प्रदत्त व्यावसायिक उन्मुखता को आत्मसात करने में भी भिन्नता पायी जाती है। प्रतिभागी शिक्षकों की यह भिन्नता अनेक कारणों से होती है। जोशी व पारीख (2006) ने अपने अध्ययन में पाया कि उन्मुखता कार्यक्रम के प्रतिभागी शिक्षकों के अभिप्रेरणा, अधिगम तथा जागरूकता स्तर पर उनके वैयवित्तक चरों का प्रभाव पड़ता है। इसलिए यह आवश्यक है कि उद्देश्यों की अधिकाधिक प्राप्ति को ध्यान में रखकर प्रतिभागी शिक्षकों की विभिन्नता के अनुसार कार्यक्रम का आयोजन किया जाए। किन्तु फिर भी उन्मुखता कार्यक्रम में भाग लेने से पहले शिक्षकों के वैयक्तिक चरों का मापन उनकी व्यावसायिक आवश्यकता का विश्लेषण करने, उनकी रूचि ज्ञात करने तथा शिक्षण अभिरूचि एवं अभिवृत्ति का मापन करने का कोई प्रयास नहीं किया जाता है, जिससे उन्मुखता कार्यक्रम के पाठ्यक्रम निर्धारण तथा उन्मुखता कार्यक्रम के आयोजन हेतु दिशा–निर्देश प्राप्त हो सके। दिशा निर्देशन के अभाव में उन्मुखता कार्यक्रम के पाठ्यक्रम निर्धारण व आयोजन में समस्याएँ उत्पन्न होती हैं, और ये कार्यक्रम अपने निर्धारित उद्देश्यों की प्राप्ति से बहुत पीछे रहते हुए मात्र एक औपचारिकता बन रह जाते हैं जिन्हें निर्धारित समयावाधि में किसी प्रकार पूरा कर लिया जाता है।

प्रतिभागी

उन्मुखता कार्यक्रम की असफलता का एक मुख्य कारण इसके प्रतिभागी शिक्षक स्वयं हैं। इन कार्यक्रमों में भाग लेने वाले शिक्षक इन कार्यक्रमों को गम्भीरता से नहीं लेते हैं। इसलिए प्रतिभागी शिक्षकों की रूचि अपेक्षित कुशलता प्राप्त करने के बजाए प्रोन्नति हेतु प्रमाण–पत्र प्राप्त करने में अधिक होती है (कुमार 1998, अग्रवाल 1998)। दास (2003) ने भी अपने अध्ययन में पाया कि उन्मुखता कार्यक्रम के प्रतिभागी शिक्षकों में अपेक्षित प्रेरणा स्तर का अभाव था। रूचि एवं आवश्यक अभिप्रेरणा के अभाव में प्रतिभागी शिक्षक व्यावसायिक कुशलता में वृद्धि के एक महत्वपूर्ण अवसर का लाभ नहीं उठा पाते हैं। प्रतिभागियों में इस अरूचि एवं निम्न प्रेरणा स्तर के लिए उत्तरदायी अनेक कारण प्रकाश में आये हैं। रहमान व बिस्वाल (1992) ने अपने अध्ययन में पाया कि प्रतिभागी शिक्षकों का मानना है कि उन्मुखता कार्यक्रम से प्राप्त ज्ञान/कौशल के अनुप्रयोग की सम्भावना अधिक सीमा तक नहीं है। आयोजकों की उपेक्षा, बोझिल पाठ्यक्रम, दोषपूर्ण आयोजन तथा उपयोग की अत्यन्त सीमित सम्भावना के कारण प्रतिभागी शिक्षकों में इन कार्यक्रमों के प्रति अपेक्षित रूचि एवं प्रेरणा का अभाव पाया जाता है।

आयोजक

उन्मुखता कार्यक्रमों को उत्साहवर्धक, रूचिपूर्ण एवं व्यवस्थित तरीके से आयोजित नहीं कर पाने का एक प्रमुख कारण आयोजकों की उदासीनता है। आयोजक इन कार्यक्रमों को औपचारिकता पूरी करने के रूप में लेते हैं। उन्मुखता कार्यक्रम के आयोजक या एकेडमिक स्टाफ कॉलेज के प्रशासनिक सदस्य प्रतिभागी शिक्षकों से प्रत्यक्ष अन्तर्क्रिया नहीं करते और न ही वे इन कार्यक्रमों के एक भी सत्र में उपस्थिति रहते हैं (रामानुजम् 1993) आयोजक टीम की इस उदासीनता के कारण आयोजक इन कार्यक्रमों की गुणवत्ता से सम्बन्धित धरातलीय कमियों से अवगत नहीं हो पाते, जिससे उन्हें दूर किया जा सके। इस प्रकार इन कार्यक्रमों के उद्देश्यों की प्राप्ति प्रभावित होती है।

संसाधन

किसी भी कार्यक्रम की सफलता प्रथमतः उपलब्ध भौतिक एवं मानवीय संसाधनों पर निर्भर करती है। उन्मुखता कार्यक्रमों के उद्देश्यो की प्राप्ति न हो पाने का एक प्रमुख कारण एकेडमिक स्टाफ कॉलेज में भौतिक एवं मानवीय सुविधाओं का अभाव है। राव, मैथ्यू, जार्ज, सामान्तराय (1990) तथा दास (2003) ने अपने अध्ययन में पाया कि विभिन्न एकेडमिक स्टाफ कॉलेजों में पुस्तकालयी सुविधा अध्ययन सामग्री दृश्य–श्रव्य सामग्री, कम्प्यूटर तथा अन्य उपकरणों का अभाव था। सीखने–सीखाने की इन आधारभूत सामग्रियों के अभाव में कार्यक्रम के उद्देश्यों की प्राप्ति की अपेक्षा कहाँ तक की जा सकती है। रहमान, बिस्वाल (1992) तथा दास (2003) ने अपने अध्ययन में पाया कि अधिकांश एकेडमिक स्टाफ कॉलेजों में पुस्तकालय, हास्टल, व्याख्यान कक्ष

आदि सुविधाओं का अभाव था। इससे दूर से आने वाले प्रतिभागी शिक्षकों विशेषकर महिला शिक्षकों को अनेक वाले प्रतिभागी शिक्षकों विशेषकर महिला शिक्षकों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन समस्याओं के कारण प्रतिभागी शिक्षक इन कार्यक्रमों में अपेक्षित रूचि एवं प्रेरणा का प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं। दास (2003) ने अपने अध्ययन में पाया कि अधिकांश एकेडमिक स्टाफ कॉलेजों में कार्यालय भवन, स्थायी स्टाफ तथा अन्य वित्तीय सुविधाओं का अभाव था। इन सुविधाओं के अभाव के कारण आयोजकों को इन कार्यक्रमों के आयोजन में कठिनाई होती है। इसके कारण आयोजक इन कार्यक्रमों के गुणवत्ता सुधार के प्रति भी जागरूक नहीं हो पाते हैं और कार्यक्रम सम्पन्न कराने की औपचारिकता मात्र पूरी करते हैं। इस स्थिति में यह उम्मीद नहीं की जा सकती है कि उन्मुखता कार्यक्रम अपने निर्धारित उद्देश्यों की अधिकतम प्राप्ति कर सकेंगे।

सुझाव

उन्मुखता कार्यक्रम के सम्बन्ध में हुए विभिन्न अध्ययनों से स्पष्ट होता है कि दोषपूर्ण पाठ्यक्रम, आयोजन में दिशानिर्देशन का अभाव, आयोजकों एवं प्रतिभागियों की उदासीनता एवं संसाधनों की कमी आदि समस्याओं के कारण उन्मुखता कार्यक्रम अपने निर्धारित उद्देश्यों को अपेक्षित स्तर तक नहीं प्राप्त कर पा रहे हैं। उन्मुखता कार्यक्रमों को शिक्षकों की गुणवत्ता सुधार से जोड़ा जाता है, अतः इनमें सुधार अनिवार्य है। इस सन्दर्भ में कुछ सुझाव यहाँ प्रस्तुत किए जा रहे हैं—

1. उन्मुखता कार्यक्रम पाठ्यक्रम का व्यापक स्तर पर गम्भीरता पूर्वक मूल्यांकन किया जाना चाहिए जिससे अप्रासंगिक प्रकरणों या घटकों में संशोधन करके पाठ्यक्रम को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में प्रासंगिक एवं अधिक परिणामोन्मुख बनाया जा सके।
2. पाठ्यक्रम सुधार की दिशा में पाठ्यक्रम का बोझ कम किया जाना चाहिए। इस सम्बन्ध में रामानुजम (2003) का सुझाव उपयोगी है, कि उन्मुखता कार्यक्रम में व्यवख्यानों के संख्या 12—15 ही रखी जाए तथा इनमें भी संक्षिप्त व्याख्यान के पश्चात् इन प्रकरणों पर चर्चा का आयोजन किया जाए इससे इन्हें रूचिकर भी बनाया जा सकता है। इन प्रकरणों से सम्बन्धित पाठ्यसामग्री प्रतिभागियों को पहले ही उपलब्ध करा दी जाए तथा कोर्स के दौरान इन प्रकरणों से सम्बन्धित केवल मुख्य मुद्दों पर ही चर्चा की जाए। पाठ्यक्रम का बोझ कम करने के लिए कुछ विषयों को केवल गोष्ठियों हेतु आरक्षित किया जा सकता है।
3. उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए उन्मुखता कार्यक्रम को अधिक रूचिकर बनाए जाने की विशेष आवश्यकता है। इसके लिए व्यावहारिक विषयों पर व्याख्यान देने के बजाए करके एवं देखकर सीखने—समझने के अवसर देने चाहिए।
4. कार्यक्रम को रूचिकर बनाने के लिए इसमें शैक्षिक भ्रमण को भी शामिल किया जाना चाहिए। इससे प्रतिभागियों के दृष्टिकोण को विस्तार भी दिया जा सकता है।
5. प्रतिभागियों को उन्मुखता कार्यक्रम से प्राप्त ज्ञान एवं कौशल के व्यावहारिक उपयोग के प्रति अनिवार्य रूप से जागरूक किया जाना चाहिए, जिससे वे कार्यक्रम के प्रति आवश्यक रूचि एवं प्रेरणा स्तर को बनाए रखे।
6. उन्मुखता कार्यक्रम में भाषा व साहित्य शिक्षण कौशल में सुधार हेतु विशेष प्रयास किए जाने चाहिए। इसके लिए अन्य प्रशिक्षणों के साथ ही साहित्य व भाषा शिक्षकों के वाक् कौशल में सुधार के प्रयास होने चाहिए जिससे कि भाषा व साहित्य शिक्षण के उद्देश्य को प्राप्त किया जा सके। इस प्रयास के कारण भाषा व साहित्य के शिक्षक भी इन कार्यक्रमों में रूचि लेंगे।
7. एकेडमिक स्टाफ कॉलेज यदि विषयों की प्रकृति को ध्यान में रखकर संकायवार उन्मुखता कार्यक्रमों का आयोजन करें तो अधिक उपयुक्त होगा। इससे उन्मुखता कार्यक्रम के आयोजन सम्बन्धी कठिनाई को दूर करने के साथ ही उद्देश्यों की अधिकाधिक प्राप्ति की जा सकेगी।
8. इन कार्यक्रमों की गम्भीरता को देखते हुए इनमें आयोजकों एवं प्रशासकों द्वारा भी रूचि एवं ध्यान केन्द्रित किया जाना चाहिए, जिससे कार्यक्रमों का नियोजन, आयोजन एवं मूल्यांकन सुचारू रूप से करने के साथ

ही इनसे अधिकाधिक परिणाम प्राप्त होने की अपेक्षा की जा सके।

9. उन्मुखता कार्यक्रम में संसाधनों पर भी ध्यान देना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। एकेडमिक स्टाफ कॉलेजों में सम्बन्धित विषय पर स्तरीय अध्ययन सामग्री, अध्ययन–अध्यापन की गुणवत्ता सुधार में प्रयुक्त उपकरण, कम्प्यूटर आदि पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराया जाना चाहिए। कार्यक्रम के दौरान प्रतिभागियों के ठहरने का उचित प्रबन्ध किया जाना चाहिए जिससे वे अनावश्यक परेशानियों से बच सकें। यू0जी0सी0 द्वारा एकेडमिक स्टाफ कॉलेजों हेतु स्थायी भवन स्थायी स्टाफ तथा अन्य वित्तीय सुविधाएँ पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध करायी जानी चाहिए, जिससे कार्यक्रम हेतु दीर्घकालीन नियोजन किया जा सकें।

निष्कर्ष

उन्मुखता कार्यक्रम शिक्षकों को व्यावसायिक कुशलता प्रदान करने के माध्यम से उच्च शिक्षा की गुणवत्ता सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इन कार्यक्रमों द्वारा अपेक्षित परिणामों की प्राप्ति न हो पाने का मुख्य कारण इसका दोषपूर्ण पाठ्यक्रम, इसके आयोजन की व्यवहारिक कठिनाइयाँ प्रतिभागियों में अपेक्षित प्रेरणा एवं रूचि का अभाव आयोजकों के प्रशासन एवं प्रबन्धन सम्बन्धी कठिनाईयाँ, तथा आवश्यक भौतिक मानवीय संसाधनों का अभाव है। उन्मुखता कार्यक्रमों को अधिक परिणामोन्मुख बनाने के लिए इन समस्याओं के निराकरण की आवश्यकता है। विभिन्न अध्ययनों के विश्लेषण के आधार पर प्रस्तुत सुझाव निस्सन्देह उन्मुखता कार्यक्रमों में सुधार हेतु उपयोगी है। इन्हें अमल में लाकर उच्च शिक्षा शिक्षकों को अधिक कुशल बनाया जा सकता है। इस प्रकार एकेडमिक स्टाफ कॉलेज के माध्यम से कुशल शिक्षक के रूप में एक ऐसे मानव संसाधन का विकास किया जा सकता है, जो उभरते ज्ञान समाज के लिए उत्पादक होगा एवं शिक्षा के क्षेत्र में नवाचारी व सृजनशील की भूमिका का निर्वहन करेगा, तभी उन्मुखता कार्यक्रम के मूल उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकेगा।

संदर्भ

1. अडवन्त, एस.बी. (1998). यू0जी0सी0 स्पॉनसर्ड रिफ्रेशर कोर्सेज : सम सजेशन्स, **यूनिवर्सिटी न्यूज**, 36 (14) अप्रैल, पृ.–11।
2. अग्रवाल, रश्मि (1998). 'वी द अनट्रेन्ड टेरशियरी टीचर', **यूनिवर्सिटी न्यूज,** 36(23), जून–8, पृ. 8।
3. चलम, के0एस0 (1991). **'एकेडमिक स्टाफ डेवलपमेन्ट इन हायर एजुकेशन',** के0पी0 बागची एण्ड कम्पनी, कलकत्ता, पृ.–8।
4. घर, बी0बी0 एवं सिंह, टी. (1990). **'एकेडमिक स्टाफ कॉलेजेज : ए डेवलपिंग कॉन्सेप्ट'**, स्टर्लिंग पब्लिशर प्रा0लि0।
5. एन0सी0ई0आर0टी0 (1970). **'रिपोर्ट ऑफ द एजुकेशन कमीशन',** 1964–66, न्यू देहली।
6. पासी, बी0के0 एव पाल, राजेन्द्र (1991). एकेडमिक स्टाफ कॉलेजेजः द रिलेवेन्स ऑफ देयर करीकुला, **न्यू फ्रन्टीयर इन एजुेशन** 21(3), जुलाई–सितम्बर पृ. 399–402।
7. पासी बी0के0 एवं पाल राजेन्द्र (1994). 'एक्सेप्टेविलिटी ऑफ करीकुलम ऑफ एकेडमिक स्टाफ कॉलेजेज, **युनिवर्सिटी न्यूज,** 32(16), अप्रैल–18, पृ. 4–8।
8. रामानुजम, पी. (1993). 'एकेडमिक स्टाफ आरिएन्टेशनः एक्सरसाइज इन फ्यूटिलिटी' **यूनिवर्सिटी न्यूज,** अप्रैल 12।
9. डब्ल्यू डब्ल्यू डब्ल्यू. यू0जी0सी0 एन आई सी. कॉम, **यू0जी0सी0 गाईडलाइन फॉर ए0एस0सीज0**, प्रति

दिसम्बर 2008, 2.45 बजे।

10. कुमार राजेश कुमार विरेन्द्र (1998). 'इस्ट्रक्शनल स्किल्स आफ यूनिवर्सिटी टीचर्स, **युनिवर्सिटी न्यूज,** 36(47) नवम्बर 23, पृ.–11–14।

11. जोशी, सुरेश व पारीख, सुशीला (2006). 'इम्पैक्ट ऑफ ओरिएन्टेशन कोर्सेस ऑन टीचर्स इन हायर एजुकेशन, **इण्डियन जर्नल आफ एडल्ट एजुकेशन**, 67(2–2) जनवरी–जून, पृ. 54।

12. बाबू सुधाकर एस0 (2007). टेक्नोलॉजिकल एडवान्सेस एण्ड रोल ऑफ आई0टी0सी0 इन टीचर ट्रेनिंग एण्ड हायर एजुकेशन, **यूनिवर्सिटी न्यूज**, 45(26) जून 25–जुलाई 1, पृ.–12–15।

13. जायसवाल, पूनम (2010). 'एकेडमिक स्टाफ कॉलेज के उन्मुखता कार्यक्रम पाठ्यक्रम का प्रतिभागियों के दृष्टिकोण एवं प्राथमिकता के सन्दर्भ में मूल्यांकन', **अप्रकाशित शोध प्रबन्ध**, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय वाराणसी।

14. दास बी0सी0 (2003). प्रॉबलम्स् ऑफ एकेडमिक स्टाफ कालसेज इन इण्डिया, **एजुट्रैक्स,** मार्च, पृ. 34–40।

15. नेशनल नॉलेज कमीशन (2006). रिकमन्डेशन्स हायर एजुकेशन, **डब्ल्यू, डब्ल्यू. डॉट नॉलेज कमीशन डाट गवर्नमेन्ट डाट इन/रिकमन्डेशन्स/हायर ए0एस00पी0** प्राप्त 12 दिसम्बर 2008, 1.40 पर।

16. राजशेरवर एच0एम0 व चन्दर, के एम0 (2002). यूजफुलनेस ऑफ रिफ्रेशर कोर्सेज इन प्रोफेशनल डेवलपमेन्ट, **यूनिवर्सिटी न्यूज,** 40 (5) फरवरी 4–10, पृ. 1–3।

17. सिंह, गुरूपदेश (1997). 'एकेडमिक स्टाफ कॉलेजेज : एन असेसमेन्ट', **यूनिवर्सिटी न्यूज,** 35 (14) अप्रैल 7, पृ. 7।

18. कुमार, विजय के0सी0 (1998) 'रिवैम्पिंग रिफ्रेशर कोर्सेज, **यूनिवर्सिटी न्यूज,** 36(41) अक्टूबर 12, पृ.–11।

19. राव, के सुधा, मैथ्यू जार्ज एवं सामन्तराय, सुधीर (1990) परफॉरमेन्स ऑफ एकेडमिक स्टाफ कॉलेजेज, **मेन्स्ट्रीम,** 28(44) अगस्त 25, पृ. 20–22।